

[श्री विश्वनाथ सिंह]

का ध्यान आकृति करना चाहता हूँ कि इस कमी को पूरित करने के लिए कोई कारगर स्टेप्स उठाये जायें ताकि लोगों को सीमेंट की कमी महसूस न हो पाए।

13.30 hrs.

(iii) NON-AVAILABILITY OF COAL

श्री राजाबतार शस्त्री (पटना) : अध्यक्ष जी हमारे देश में कोयले की बहुत कमी हो गई है और लोगों को मिल नहीं रहा है, दाम बढ़ने जा रहे हैं, बेल्क की कीमत पर भी लोगों को नहीं मिल रहा है। तो मैं चाहता हूँ कि इस तरह सरकार का ध्यान जाय। कल के "पेट्रियट" अखबार में निकाला है कि कोयला 10 रु० प्रति मन के हिसाब से पटना में बिक रहा है। यह पटना की स्थिति है। उत्तर बिहार के किसी जिले में कोयला नहीं मिल रहा है, दक्षिण बिहार के किसी जिले में भी नहीं मिल रहा है। खुद हजारीबाग में जहाँ से कोयला निकलता है, वहाँ भी कोयला नहीं मिल रहा है।

उसी तरह से आज के "टाइम्स आफ इंडिया" के अनुमार यू० पी० प्रलेम्बली में वहाँ के बाब मंत्री ने बयान दिया है कि पूरे राज्य में कोयले की बहुत कमी है। उन को यह भी शिकायत है कि कोयला ढोने के लिये रेल के डिब्बे नहीं मिल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप तो भाषण में चले गये।

श्री राजाबतार शस्त्री : इस तरह की स्थिति आज पूरे देश में है, सरकार का ध्यान इधर जाना चाहिये। सरकार इस पर ध्यान दे, और मैं तो आप से निवेदन करूँगा कि इस पर आप बहस करवा दीजिये ताकि पूरी स्थिति की जानकारी हमें हाँ जाए और हम लोगों को जो कहना हो वह कहें और साथ ही साथ सरकार का रास्ता भी बतायें।

MR. SPEAKER: Mr. Pilloo Mody, I have just received the information that Mr. Khadilkar has gone to Poona and is returning on 26th April. We will have to wait till then.

13.32 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS, 1973-74—  
Contd.

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS—Contd.

MR. SPEAKER: The House will now take up further discussion and voting on the Demands for Grants under the control of the Ministry of External Affairs.

Shri Hari Kishore Singh to continue his speech.

SHRI HARI KISHORE SINGH (Pupri): Mr. Speaker, Sir, I was listening with rapt attention to Shri Pilloo Mody with all seriousness that he deserves and I was amused to find a drain inspector-like survey of the conduct of our foreign policy from him.

Shri Frank Anthony with all his lucidity could not hide the abject poverty of his thought in dealing with the intricate problems of foreign relations. I strongly object to his insinuation that because of their political past, some of the members of the Government are trying to mislead the Prime Minister and are making an effort to turn this country into a Soviet satellite. The truth is far from this and this proposition is as misplaced as was the mischievous propaganda in the '50s that India was becoming an Anglo-American satellite and stooge.

I agree with Shri Shyamnandan Mishra when he says that a great country like India has to remain economically viable and militarily strong. But I beg to differ from him when he says, in the recent years, the conduct of our foreign policy has lacked elan and lustre. If anything, the truth is to the contrary.